**International Journal of Hindi Research**
**ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22**
**Received: 01-09-2020; Accepted: 16-09-2020; Published: 02-10-2020**
**www.hindijournal.com**
**Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 60-63**

# फणीश्वर नाथ रेणुः एक लोकतात्विक पुरोधा

**घनश्याम प्रसाद**
शोधार्थी, वीर कुँअर सिंह, विश्व विद्यालय, आरा, बिहार, भारत

## प्रस्तावना

फणीश्वर नाथ रेणु हिन्दी उपन्यास साहित्य के आंचलिक उपन्यासकारों में से एक है। रेणु अपने साहित्यिक रचना का आधार एक अंचल विशेष को ही बनाया तथा उस अंचल विशेष की ही आंचलिक शब्दावली का प्रयोग करते हुए वहाँ के मानव जीवन तथा परिस्थितियों का सजीव चित्र प्रस्तुत किया। जैसे कि उनके ख्याति प्राप्त उपन्यासों यथा मैला आँचल के लिए मेरीगंज, परती परिकथा के लिए–परानपुर गाँव तथा जुलुस के लिए नवीनगर को उपन्यास का आधार बनाया गया है। रेणु मानव के प्रति बेहद संवेदनशील कथाकार है। उनकी गहरी मानवीय संवेदना और अंचल विशेष की मिट्टी का मोह उन्हें इस तरह प्रभावित किया कि वे निरीह ग्रमीण लोगों की वेदना एवं पीड़ा को अपनी ही पीड़ा समझने लगे। साहित्यकार की यह संवेदना ही साहित्यकार के मन पर इस तरह हावी हो जाता है कि साहित्यकार लिखने के लिए मजबूर हो जाता है। रेणु की यही संवेदना और प्रगतिशील विचार धारा ने उन्हें साहित्य सृजन के लिए प्रेरित किया। मैला आँचल फणीश्वर नाथ रेणु की सर्वोत्कृष्ट कृति है जो लोक तत्वों से भरा पड़ा है। लोक तत्व का अर्थ है एक अंचल विशेष की आम–जनता या जन जीवन से जुड़ी हुई वहाँ की वास्तविक स्थिति। रेणु के हर साहित्य में जिस अंचल विशेष का वर्णन है, वहाँ की लोक भाषा, लोक संस्कृति, लोक संगीत, लोक नृत्य, लोक बोली, लोक शैली, लोक मान्यता आदि को अभिव्यक्ति प्रदान की गई है। प्रेमचन्द द्वारा ग्रम्य जीवन की यथार्थ को जिस प्रकार अपने साहित्यों में मुखरित किया गया उस परम्परा को आगे बढ़ाने का काम, समृद्वि प्रदान करने का काम रेणु जी द्वारा किया गया। इस प्रकार रेणु जी ने साहित्य रचना का एक नया अंदाज, नया दृष्टिकोण साहित्य प्रेमियों की प्रदान किया। निष्कर्षत रेणु जी को हिन्दी साहित्य का लोकतात्विक पुरोधा कहना समीचीन होगा।

मैला आँचल' उपन्यास को ही रेणु जी की लोकतात्विक संदर्भ का आधार बनाया गया है। रेणु जी के लेखन का मूल उदेश्य आशावादी ही रहा है। उनकी सोच है कि हर अंचल विशेष में रहने वाले हर मानव में वह अकुत क्षमता है जो अपने आप को हर विषम परिस्थिति से मुक्त कर सकता है। मैला आँचल उपन्यास का आरंभ रेणु जी ने वहाँ की भौगोलिक, सांस्कृतिक व लोकतात्विक संदर्भो से शुरू किया लेकिन धीरे–धीरे उनके उपन्यास का आधार स्तम्भ वहाँ की मूल समस्या गरीबी और अशिक्षा बन गई। पूर्णिया जिला का एक पिछड़ा मेरीगंज गाँव की लोक भाषा, लोक संस्कृति, लोक संगीत, लोक शैली, लोक परम्परा, अंधविश्वास इत्यादि का सविस्तार वर्णन ही मैला आँचल उपन्यास के अभिव्यक्ति का आधार स्तम्भ है।

रेणु जी ने एक अंचल विशेष का पिछड़ा गाँव 'मेरीगंज' को सम्पूर्ण भारतवर्ष के लिए पिछड़ा गाँाव के रूप में वर्णित किया है। मैला आँचल उपन्यास में 'मेरीगंज' गाँव के जन–जीवन के हर पहलू को रेणु जी ने अभिव्यक्ति प्रदान की है। लोक जीवन के विविध पहलूओं की उन्होंने अपने साहित्य में जगह दी है। मानव जीवन का कोई भी पहलू रेणु जी के मैला आँचल से छुटा नहीं है, इस अंचल विशेष की अच्छाई–बुराई सबका समावेश रेणु जी ने 'मैला आँचल मे किया है। उन्होंने मैला आँचल की भूमिका में ही लिखा है ''इसमे फूल भी हैं शूल भी, धूल भी है गुलाब भी, कीचड़ भी है चन्दन भी, सुन्दरता भी है, कुरूपता भी – मै किसी से दामन बचाकर निकल नही पाया।'' [1] मैला आँचल (प्रथम संस्करण की भूमिका) पृष्ट .....

'मैला आँचल' उपन्यास को स्वयं फणीश्वर नाथ रेणु जी ने ही आंचलिक उपन्यास की उपमा प्रदान करते हुए प्रथम संस्करण की भूमिका मे कहा है – ''यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है, इसके एक ओर है नेपाल दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिम बंगाल। विभिन्न सीमा रेखाओं से इसकी बनावट मुकमल हो जाती है, जब हम दक्खिन में संथाल परगना और पच्छिम में मिथिला की सीमा रेखाएँ खींच देते है। मैने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को पिछड़े गाँवों का प्रतीक मानकार इस उपन्यास कथा का क्षेत्र बनाया है''[2] मैला आँचल (पृष्ट– प्रथम संस्करण की भूमिका)

मैला आँचल उपन्यास का एक पात्र डा0 प्रशान्त है जो अज्ञात कुलशील है। माँ ने उसे एक मिट्टी के घड़ा में रखकर कोशी मैया की गोद में समर्पित कर दिया था। एक दिन उपाध्याय दम्पति जो बाढ़ पीड़ितो को रिलीफ बाँटने के उदेश्य से नाव से कोशी को पार करने के दरम्यान तैरते हुए उस घड़े से बच्चे की रोने की आवाज सुनकर घड़े को छान लिया। आदर्श आश्रम में एक युवती दुखिया रहती थी जिसका पति उसे छोड़कर एक नेपाली से शादी कर लिया था। उस दुखिया का नाम था–स्नेहमयीं।

स्नेहमयी के स्नेह और उपाध्याय परिवार के देखभाल में पला डा0 प्रशान्त पी0एम0सी0एच0 पटना से डॉक्टरी की पढ़ाई कर अपना कार्य क्षेत्र पूर्णिया का पिछड़ा गाँव 'मेरीगंज' को चुनता है जबकि उसके पास नगरों और महानगरों से कई प्रस्ताव आते है। ''जी, मै विदेश नहीं जाऊँगा, पूर्णिया और सहरसा के नक्शे को फैलाते हुए उसने कहा था, ''मै इसी नक्शे के किसी हिस्से में रहना चाहता हूँ। यह देखिए, यह है सहरसा का वह हिस्सा, जहाँ हर साल कोशी का तांडव नृत्य होता है और यह पूर्णिया का पूर्वी अंचल जहाँ मलेरिया और काला–आजार हर साल मृत्यु की बाढ़ ले आते है। '' [3] (मैला आँचल पृष्ट–56)

डॉ0 प्रशान्त की उपरोक्त पंक्तियाँ इस अंचल विशेष की लोगों की भले मानसी या लोक भावना को बयां करती है। डा0 प्रशान्त के इस फैसले को सुनकर पी0एम0सी0एच0 के एक मशहूर डा0 पटवर्धन ने डॉ0 प्रशान्त के बेवकुफ कहा।

डॉ0 प्रशान्त की एक सहकर्मी डॉ0 ममता ने कहा ''आखिर तुम्हारा भी माथा खराब हो गया। तुमने तो कभी बताया नहीं। बलिहारी है तुम्हारा! ..... ओह प्रशान्त, तुम कितने बड़े हो, कितने महान! मै तो अभी आ रही हूँ, बनारस से। आते ही चुन्नी ने तुम्हारी चिट्टी दी।''[4] मैला आँचल (पृष्ट–57)

इस प्रकार डॉ0 प्रशान्त मलेरिया एवं काला–आजार पर शोध

करने के लिए मेरीगंज के एक मलेरिया सेन्टर पर पदस्थापित होता है। 'मेरीगंज' गाँव जो अंधविश्वास और जाति पाती जैसी कुप्रथा से जकड़ा हुआ गाँव है। वहाँ मैलेरिया के लिए शोध केन्द्र खुलने पर वहाँ के लोगों से धीरे–धीरे अंध विश्वास खत्म होता गया। ''अखिल भारतीय मेडिकल गजट में डाक्टर प्रशान्त, मैलेरियोलाजिस्ट के रिसर्च की छमाही रिपोर्ट प्रकाशित हुई। गजट के सम्पादक मंडल में भारत के पाँच डाक्टर है। इस रिपोर्ट पर उनलोगों ने अपना–अपना नाम नोट दिया हैं। मद्रास के डॉ0 टी0 रामास्वामी, एम0एस0सी0डी0टी0एम0 (कैल) पीएच0डी0 (एडीन) एफ0आर0एस0जे0 (एडीन) ने लिखा है ''हमें विश्वास हो गया है कि डा0 प्रशान्त मैलेरिया और काला–आजार के बारे में ऐसे तथ्यों का उद्घाटन करेंगे, जिनसे हम अब तक अनभिज्ञ थे। नई दवा तथा नए उपचार की सम्भावनाओं के लिए सारा मेडिकल संसार उनकी ओर निगाहें लगाएँ बैठा है।''[5] मैला आँचल (पृष्ट–169)

रेणु जी ने मैला आँचल उपन्यास में मठाधीशों के कुकृत्यों का भी वर्णन किया है। साथ ही साथ सत्री चेतना को भी इस उपन्यास के माध्यम से जागृत किया है। तात्कालीन कालावधि में मठो पर दासी प्रथा चल रही थी। महंथ सेवादास के मठाधीश काल में लछमी के पिता मठ पर सेवा–टहल का काम करके अपने परिवार का जीवन यापन करते थे। जब लछमी नाबालिग थी तब ही महंथ सेवादास लछमी को अपने मठ पर पढ़ाने–लिखाने की लालच देकर रख लिया था। लछमी के पिता को आश्वस्त किया था कि लछमी को पढ़ा लिखाकर उसके बालीग हो जाने पर मै उसकी शादी कर दूँगा। लेकिन महंथ सेवादास लछमी को मठ का दासिन बनाकर मठ पर रख लिया। महंथ सेवादास के मरने के बाद महंथ रामदास भी लछमी के साथ कुकृत्य करने से बाज नही आता। लछमी, महंथ रामदास से कहती है तुझे शर्म नहीं आती, मै तुम्हारी गुरूमाई हूँ रामदास! महंथ रामदास कहता है – कैसी गुरूमाई ? महंथ के मरने के बाद अब तुम्हे नये महंथ की दासिन बनकर रहना होगा। अब तुम मेरी दासिन हो। ''चुप कुत्ता! लछमी हांथ छुड़ाकर रामदास के मूँह पर जोर से थप्पड़ लगाती है। दोनों पाँवों को जरा मोड़कर, पूरी ताकत लगाकर रामदास की छाती पर मारती है। रामदास उलटकर गिर पड़ता है। सतगुरू हो!

सन्तो अचरज भौ एक भारी, पुत्र धयल महतारी
एके पुरूष एक हि नारी, ताके देखु विचारी।''[6] मैला आँचल (पृ0–128–129)

मैला आँचल उपन्यास के माध्यम से रेणु जी ने मेरीगंज की ग्रमीण जनता का राष्ट्र के प्रति प्रेम को भी दर्शाया है। बावन दास और बालदेव मैला आँचल उपन्यास का ये दोनों चरित्र देश के सच्चे सिपाही के रूप में मुखरित हुए है। बालदेव जी को राष्ट्र की तात्कालिक परिस्थिति को देखकर ऐसा लगता है कि भारथमाता जार–बेजार रो रही है। बावनदास, चुन्नी गुसाई और बालदेव जी तीनो ने सुराजी में अपना नाम दर्ज करा लिया है। ''चर्खा कर्धा, झंडा तिरंगा और खद्दर को छोड़कर सभी चीजें मिथ्या है। सुदेशी बाना, विदेशी बैकाठा।

अरे देसवा के सब धन–धान विदेसवा में जाए रहे।
मँहगी पड़त हर साल, कृसक अकुलाय रहे''।[7] मैला आँचल (पृ0–143)

उपरोक्त तीनों सुराजी राष्ट्र के प्रति आम जनात को जागरूक करने के लिए प्रेरणा गीत अपनी लोक भाषा में गाते है जो मेरीगंज की लोकतात्विक संदर्भ को दर्शाता है।

फणीश्वर नाथ रेणु ने लोक गीत और लोक संस्कृति का अनूठा वर्णन मैला आँचल उपन्यास के माध्यम से किया है। वे कहते है कि मानव की सामाजिक, आर्थिक परिस्थितियाँ बदलती है, समय बदलता है लेकिन लोकतत्व या ये कहें कि मानव का अर्न्तमन सदियों बाद भी नहीं बदलता। रेणु जी के मैला आँचल में भोर में स्त्री मजदूरों द्वारा गेहूँ की कटनी के समय का एक लोक गीत को इस प्रकार मुखरित किया गया है :–

सब दिन बोले कोयली भोर भिनसरवा ..... वा ..... वा
बैरिन कोयलिया, आजु बोलय आधी रतिया हो रामा ..... ऑ ..... .ऑ
सुतल पिया के जगावे हो रामा .....आँ .....आँ''। [8] मैला आँचल (पृ0–155)

रेणु ने मैला आँचल उपन्यास में तत्कालीन समाज का स्त्रियों के प्रति कुंठित नजरिया को स्पष्ट किया है। डा0 प्रशान्त को एक व्यक्ति अपनी बहन के ईलाज के लिए बुलाकर लाता है। बहन डायरिया से ग्रसित है तीस बार पेट चला है, चेहरा पीला पड़ गया है, बिल्कुल मरणासन्न की स्थिति में नजर आती है। डा0 साहब को सुई का बड़ा जैक्सन निकालते हुए देखकर लड़की के पिता द्वारा कहा जाता है, छोटा जैक्सेन से ही काम चल जाएगा। बड़ा जैक्सेन तो पचास रूपये का होगा। इतना महंगा क्यो दे रहे है, लड़की की बिमारी है। डा0 ने कहा, मतलब, मै समझा नही। ''हुजूर लड़की की जाति बिना दवा दारू के ही आराम हो जाती है! लेकिन बेचारे बूढ़े का इसमें कोई दोष नहीं। सभ्य कहलाने वाले समाज में भी लड़कियाँ बला कि पैदाईश समझी जाती है। जंगल आर।''[9] मैला आँचल (पृ0–156)

उपरोक्त पंक्तियाँ मेरीगंज गाँव के लोगों की स्त्रियों के प्रति नकारात्मक सोच को दर्शाता है। चूकि कहा गया है कि परिस्थितियाँ तो बदलती है लेकिन लोकतत्व वहीं रह जाता है। जैसा कि तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की सामाजिक आर्थिक स्थिति में तो संपन्नता आ चुकी है लेकिन उनकी लोक भावना मे कोई परिवर्तन नहीं हो सका है।

डा0 प्रशान्त मेरीगंज की ग्रामीणों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करना चाहते है। गाँव में मलेरिया सेन्टर खुलने से गाँव के लागों का अंधविश्वास कम हुआ है। साथ –साथ डा0 प्रशान्त का तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद की बेटी कमली से प्रेम हो जाता है। एक दिन कमली के जिद्द करने पर डा0 प्रशान्त उसे अपने अस्पताल दिखाने के लिए ले जाते है। ग्रमीण महिलाएँ जो कुएँ से पानी ले रही थी, अपनी आँखे फाड़–फाड़कर प्रशान्त और कमली को निहार रही थी। गणेश नामक एक बालक गिल्ली डंडा खेल रहा था जो प्रशान्त एवं कमली को देखकर जोर से गाने लगता है –

''पूलब से छाहेब आया
पच्छिम छे मेम
छाहेब बोले गिटि–पिटिल
खिल–खिल हँछे मेम''[10] मैला आँचल (पृ0–162)

बालक की उपरोक्त पंक्तियाँ उसके निर्मल भाव को तो प्रदर्शित करता ही है साथ–साथ 'मेरीगंज' की लोक भावना का सार भी प्रस्तुत करता है।

रेणु जी ने मैला आँचल उपन्यास के माध्यम से ग्रमीण जनता को पूंजीवाद के विरूद्व क्रांतिकारी बनाने की कोशिश की है। क्रांतिकारी गीत को भी लेखक ने वहां के लोक भाषा में किस प्रकार उद्वृत किया है उसे निम्न पंक्तिया बयां करती है।

''अरे जिन्दगी है किरान्ती से, किरान्ती में बिताए जा।
दुनिय के पूंजीवाद को, दुनिया से मिटाएँ जा।

चकै के चकधुम मकै के लावा .....।'' [11] मैला आँचल (पृ0–182)

मैली आँचल उपन्यास के माध्यम से रेणु जी मेरीगंज अंचल की लोक संस्कृति को मुखरित तो किया ही है साथ–साथ ये भी अभिव्यक्त किया है कि समय के साथ मानव की परिस्थितियाँ तो बदल सकती है लेकिन मानव मूल्य में कोई परिवर्तन संभव नहीं। जैसे तहसीलदार साहब को डा0 प्रशान्त से प्रगाढ़ प्रेम था लेकिन परिस्थिति वश आज डा0 प्रशान्त से उन्हे बहुत घृणा भी हो चुका है। तहसीलदार साहब दिन भर ताड़ी पीकर घर में ही रहते है बाहर नहीं निकलते। कमली के माँ भी कई दिनों से दरवाजा नहीं खोली है। कुएँ की तरफ वाली दरवाजा कभी–कभी खोलती है। कमरें के कोने में एक छोटा सा दीपक जल रहा हैं। कमली के स्नेहमयी गोद में उसका नवजात शिशु सो रहा है। तहसीलदार साहब अपनी प्रतिष्ठा को लेकर चिंतित रहते है। हमेशा बेहोश सा नजर आते है लेकिन जैसे ही डा0 प्रशान्त स्वयं को तहसीलदार साहब की जमाई अर्थात कमली के बच्चा का पिता स्वीकार करता है। तहसीलदार साहब का चरण स्पर्श करता है। तहसीलदार साहब की आँखों से प्रसन्नता की आँसू बहने लगते है।

सुमरित दास छट्ठी के भोज का निमंत्रण पूरे गाँव को देता है। गाँव के लोग डा0 प्रशान्त और कमली के बारे में कई बातें आपस में तो करते है लेकिन निमंत्रण को कोई अस्वीकार नहीं करता। तहसीलदार साहब कमरे से बाहर आकर एक तात्कालिक घोषणा करते है जिसकी अपेक्षा आम जनता को बिल्कुल नहीं थी। वे घोषणा करते है कि ''सुमरित दास! लेगों से कह दो–हरेक परिवार को पाँच बीघा की दर से जमीन मै लौटा दूँगा। साँझ पड़ते–पड़ते मै सब कागज–पतर ठीक कर लेता हूँ। ..... और संथाल टोली में जाकर कहो– वे लोग भी आकर रसीद ले जाएँ। एक पैसा सलामी या नजराना, कुछ भी नही। अरे, मै क्यों दूँगा ? दे रहा है नया मालिक।''[12] मैला आँचल (पृ0–351)

उपरोक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि मानव मूल्य कभी समाप्त नहीं होता। परिस्थितियाँ मानव मूल्यों को अल्प समय के लिए दबा सकती है, लेकिन सर्वदा के लिए समाप्त नही कर सकती। जैसा कि उदाहरण से स्पष्ट है कि तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद के मानव मूल्य अल्प समय के लिए, परिस्थितिवश दबा हुआ था, लेकिन ग्रामीण कृषको से उनका प्रेम समाप्त नहीं हुआ था। जैसे ही तहसीलदार साहब के अंदर की दबी हुई प्रेम कृषकों के लिए जागृत हुआ, कि वे एकाएक घोषणा कर दिए कि प्रत्येक परिवार को पाँच बीघा की दर से जमीन लौटा दूँगा।

डा0 प्रशान्त के अन्दर का मानव मूल्य ही तो उसे महानगरों से खींचकर ग्रमीण परिवेश के लोगो की सेवा के लिए लाता है। डा0 प्रशान्त मैलेरिया और कालाजार की शोध पर अपना भरपूर कोशिश करता है। लेकिन मन चाहा सफलता नहीं दिखने पर वह घोषणा करना चाहता है कि मै अपने शोध कार्य में असफल हो गया। लेकिन डा0 ममता कहती है कि डा0 प्रशान्त कोई रिसर्च असफल नहीं होता। तुमने अपने अंचल की मिट्टी और मनुष्य को इतना प्रेम दिया यही सर्वोपरि है।

रेणु जी ने अपने संवदिया कहानी के माध्यम से 'जलालगढ' गाँव की लोक संस्कृति को अभिव्यक्ति प्रदान की है। संवदिया कहानी का एक पात्र हरगोबिन है जो गाँव के सभी लोगों का संवाद उसके संबंधियों के यहाँ पहूँचाता है। बड़ी हवेली की बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को अपने मैके में संवाद भेजने के लिए बुलायी। बड़ी बहुरिया ने हरगोबिन को कहा–आपको एक संवाद लेकर मेरी माँ के पास आज ही जाना है। बताइए क्या संवाद देना है। बड़ी बहुरिया की आँखे भर आई। हरगोबिन भी काफी भावुक हो गया। हरगोबिन बोला–बड़ी बहुरिया मत रोइए, दिल को मजबूत करिए। ''और कितना कड़ा करूँ दिल ? ..... माँ से कहना, मै भाई भाभियों की नौकरी करके पेट पालूँगी। बच्चों की जुठन खाकर एक कोने में पड़ी रहूँगी, लेकिन यहाँ अब नहीं ..... अब नहीं रह सकूँगी। ..... कहना, यदि माँ मुझे यहाँ से नहीं ले जाएगी, तो मै किसी दिन गले में घड़ा बाँधकर पोखरे में डूब मरूँगी। बथुआ साग खाकर कब तक जीऊँ ? किसलिए ..... किसके लिए ?''[13] संवदिया ( अंतरा पृ0–104 )

हरगोबिन बड़ी बहुरिया का संवाद पहूँचाने कि लिए तैयार होकर निकला तो बड़ी बहुरिया अपने आँचल के खूँट से पाँच रूपए का एक गंदा नोट निकालते हुए हरगोबिन से कही– आपको मै पूरा राह खर्च भी नहीं दे पाऊँगी। और आने का खर्च माँ से माँग लीजिएगा। हरगोबिन ने कहा–बड़ी बहुरिया मै राह खर्च का इंतजाम कर लूँगा। हरगोबिन किराये के खर्च का इंतजाम कर थाना बिहपुर अर्थात बड़ी बहुरिया के गाँव पहूँच गया। लेकिन संवाद सुनाने में उसे काफी शर्म आ रही थी। उसे लगता था मेरे गाँव का नाम नीचे हो जायेगा। हरगोबिन बिना संवाद पहुँचाए ही बड़ी बहुरिया के माँ के पास से लौट गया। माँ को कह दिया कि सब कुछ ठीक ठाक है। यहाँ तक कि लौटते समय बड़ी बहुरिया के बड़े भाई ने पूछा कि राह खर्च तो है न ? हरगोबिन कह दिया कि आपकी दुआ से किसी बात की कमी नहीं। जबकि हरगोबिन के पास घर तक पहूँचने का राह खर्च कम ही था। इसलिए वह कटिहार तक का ही रेल टिकट ले सका। कटिहार स्टेशन से जलालगढ़ की दूरी 20 कोस था जिसे हरगोबिन पैदल ही तय करके शाम तक जलालगढ़ पहूँच गया। हरगोबिन बड़ी बहुरिया का पैर पकड़ लिया। '' बड़ी बहुरिया! मुझे माफ करो। मै तुम्हारा संवाद नही कह सका। ..... तुम गाँव छोड़कर मत जाओ। तुमको कोई कष्ट नही होने दूँगा। मै तुम्हारा बेटा! बड़ी बहुरिया, तुम मेरी माँ, सारे गाँव की माँ हो! मै अब निठल्ला बैठा नही रहूँगा। तुम्हारा सब काम करूँगा। ..... बोलो बड़ी माँ, तुम ..... .....तुम गाँव छोड़कर चली तो नही जाओगी ? बोलो।''[14] संवदिया ( अंतरा पृ0–111 )

उपरोक्त पंक्तियाँ जलालगढ़ गाँव की लोक संस्कृति, लोक भावना को प्रदर्शित करती है। हरगोबिन संवाद का दुहराव करते हुए रास्ते में जा रहा है कि मै बड़ी बहुरिया के संवाद को हु–बहू कह सकूँ। लेकिन बड़ी बहुरिया के घर पहूँचने पर रात में बिना संवाद दिए सो गया। सवेरे संवाद दे दूँगा। लेकिन रात भर वह सोचता रहा कि इस संवाद को सुनकर यहाँ के लोग मेरे गाँव के नाम पर थुकेंगे। कि कैसा गाँव–घर है। हरगोबिन के अंदर लोक–लज्जा और हया है जो उस संवाद को कहने से रोक लिया है। इस तरह से कहा जा सकता है कि फणीश्वर नाथ रेणु के प्रत्येक साहित्य में लोकतात्विकता भरा पड़ा है।

अतः कहा जा सकता है कि फणीश्वर नाथ रेणु का प्रत्येक साहित्य लोक तत्वों से भरा पड़ा है, उनके साहित्य का प्रत्येक चरित्र लोक संस्कृति, लोक भाषा, लोक भावना से पूर्णतः प्रेरित दिखता है। लोकतत्व जो हर क्षेत्र में हर मानव में एक समान है यही कारण है कि फणीश्वर नाथ रेणु जी 'मेरीगंज' को सम्पूर्ण भारतवर्ष के पिछड़े गाँव की कहानी माना है।

अतः जरूरत है प्रत्येक भारतीय को अपने मिट्टी को तरजीह देने की, ग्रामीण जीवन मूल्यों को अपनाने की, आधुनिक विकास के साथ ग्रामीण विकास को भी तरजीह देने कि ताकि हमारे देश का चतुर्दिक विकास हो सके।

## संदर्भ सूची


1. फणीश्वर नाथ रेणु, मैला आँचल (पृष्ट– प्रथम संस्करण की भूमिका), राज कमल पेपर बैक्स, राज कमल प्रकाशन, प्राइवेट लिमिटेड, 1–बी0, नेताजी, सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली–110002,43वां संस्करण 2019
2. वहीं (पृष्ट– प्रथम संस्करण की भूमिका)
3. वहीं (पृष्ट– 56)
4. वहीं (पृष्ट– 57)
5. वहीं (पृष्ट– 169)
6. वहीं (पृष्ट– 128–129)

7. वहीं (पृष्ट– 143)
8. वहीं (पृष्ट– 155)
9. वहीं (पृष्ट– 156)
10. वहीं (पृष्ट– 162)
11. वहीं (पृष्ट– 182)
12. वहीं (पृष्ट– 351)
13. एन0सी0ई0आर0टी0, अंतरा–भाग–2 (पृष्ट–104), कक्षा 12 के लिए हिन्दी (ऐच्छिक) की पाठ्य पुस्तक, पुनर्मुद्रण मार्च–2015, फाल्गुन–1936
14. वहीं (अंतरा पृष्ट–111)